ओंकार (ऊँ) में निहित अनेक आत्मस्थितियाँ

ऊँकार में सारी सृष्टि समाहित है। यदि आंकार को हम समझ सकते ह। तो सारी सृष्टि के रहस्यों को समझ सकते है। यही प्रणवनाद समस्त देवता स्वरूप है- यह बात हम शुरू से सुनते आ रहे ह। इसके साथ ही जन्म कर्म के समग्र स्वरूप और आत्मा की पुरोगति को व्यक्त करने में ऊँकार की महानता को विशेष रूप से देखते है।

इंसान का मतलब है शरीर और आत्मा का मिलन। शारीरिक उन्नति और स्थितियों के बारे में तो हम पहले ही समझ चुके है परन्तु इसके भीतर छिपी आत्मा की स्थितियाँ ओंकार में कैसे भरी हैं, इसे अब देखते ह।

'ऊँ' में पाँच भाग है जो मनुष्य की आत्मा के विकास में पाँच स्थितियों की सूचना हमें देते है। ऊँ का पहला भाग शिशु आत्मा और बालात्मा का द्योतक है। ये दोनो शिशु आत्मा और बाल आत्मा सिर्फ़ शरीर को ही पधानता देते है। तमोगुण, प्रधान होते है, भोले होते है। सिर्फ़ खाना, पीना, सोना जैसे काम ही करते है। जीवन का मतलब सिर्फ़ शारीरिक जीवन ही समझते है और इसी के सुख के लिए प्रयत्नशील रहते है।

ऊँकार का दूसरा भाग यवावस्था की आत्मस्थिति का द्योतक है। ये लोग रजोगुण प्रधान हैं- मन को प्रमुखता देते है, जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिष्ठा सम्मान चाहते है। किसी की परवाह न करके, माया में रह कर अपनों का सुख सन्तोष ही चाहते हैं।

ऊँकार का तीसरा भाग प्रौढ़ आत्मा का चिहन है। ये लोग सत्वगुण प्रधान है। हमेशा सबका उन्नति और भलाई चाहते है। ये शुभात्माएँ हैं।

ऊँकार का चौथा भाग अर्द्धचंद्राकार वृद्धात्मा को सूचित करता है। यह ध्यान जीवन का संकेत है। ये वृद्धात्माएँ हमेशा शुद्ध सात्विकता से भरी रहती हैं। अपने को शरीर के रूप में नहीं, आत्मा के रूप में समझती हैं।

ऊँकार का पाँचवाँ भाग, अर्द्धचन्द्र के बीच में रहने वाला बिन्दु है। यह पूर्णात्मा का संकेत है। ये लोग निर्गुणी है। समस्त परिस्थितियों में भी अखण्ड ध्यान जीवन बिता रहे है। इस प्रकार मनुष्य की आत्मा अबाधता से पूर्ण होने तक की सभी स्थितियों में ऊँकार

से भरी है। यदि इस बात को समझ लें तो मनुष्य के पूरे विकास को समझा जा सकता है।